ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN NO.: 2347-2944, RNI : UPBIL04292,REG.No.: 561/2013-2014Vol.-1,No.-1 **PP-302-306**,YEAR-2013

सम्पूर्ण मध्य प्रदेश एवं मालवा पठार प्रदेश के ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या का तुलनात्मक भौगोलिक अध्ययन

विनय कृष्ण पाण्डेय

सारांश *– प्रस्तुत शोध पत्र में सम्पूर्ण म0प्र0 एवं मालवा पठार प्रदेश के ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या का अध्ययन दो मुख्य उद्देश्यों के आधार पर किया गया है। पहले उद्देश्य में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या के वृद्धि प्रतिशत का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है तथा द्वितीय उद्देश्य के अन्तर्गत गुणात्मक स्तर में रोजगार के क्षेत्र को तथा ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या को आपस में जोड़कर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है तथा यह समझने का प्रयास किया गया है कि बड़े नगरों वाले जिलों में प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत क्यों कम है तथा छोटे नगरीय जनसंख्या वाले जिलों में द्वितीय क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या क्यों कम है तथा दोनों के मध्य सम्बन्धों को ढूढ़ने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध में ग्रामीण क्षेत्र एवं नगरीय क्षेत्र किस प्रकार एक दूसरे से सम्बन्धित हैं या किस प्रकार एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, जानने का प्रयास किया गया है।*

सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में वर्तमान में 52 जिले हैं जिसमें मालवा पठार के अन्तर्गत म0प्र0 के 14 जिलों को मालवा पठार के रूप में प्रस्तुत शोध में अध्ययन किया जा रहा है। वर्तमान समय में नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या के मुख्यतः दो पहलु हैं। जिसे माना जाता है कि नगरीय जनसंख्या ज्यादा विकसित अवस्था में है। चूंकि भारत का ग्रामीण क्षेत्र काफी पिछड़ा है तथा यह माना जाता है कि ग्रामीण जनसंख्या काफी पिछड़ी अवस्था में हैं यद्यपि ग्रामीण जनसंख्या का मुख्य कार्य कृषि उत्पादन में योगदान देना है जो कि शहरी एवं ग्रामीण दोनों आबादी के भरण पोषण के लिए उत्तरदायी है।

अतः महत्व की दृष्टि से देखें तो दोनों ही काफी महत्वपूर्ण हैं नगरीय जनसंख्या जहाँ कृषि कार्यों से इतर सूचना, संचार, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा आदि कार्यों के वृद्धि एवं विकास में योगदान देती है तो ग्रामीण जनसंख्या मुख्यतः कृषि उत्पादन में योगदान देती है। दोनों क्षेत्रों के महत्व एवं नगरीय क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं की कमी को लोगों के सामने लाना ही प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन क्षेत्र– इस शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र सम्पूर्ण मध्य प्रदेश एवं मुख्यतः मालवा पठार प्रदेश है जो पश्चिमी मालवा पठार प्रदेश एवं पूर्वी मालवा पठार प्रदेश में विकास के आधार पर विभाजित किया जा सकता है। गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं को गर्भावस्था की अवधि के दौरान मजदूरी के नुकसान की आंशिक भरपाई और पोषण को पूरक करने के लिए कम से कम 6,000 रुपये का नकद मातृत्व लाभ प्राप्त करने का अधिकार है। एनएफएसए के तहत पात्र व्यक्तियों को खाद्यान्न या भोजन की उचित मात्रा की आपूर्ति न होने की स्थिति में, ऐसे व्यक्ति संबंधित राज्य सरकार से ऐसे खाद्य सुरक्षा भत्ते को प्राप्त करने के हकदार होंगे, जिसका भुगतान प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे समय और तरीके से किया जाएगा, जैसा कि केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित किया जा सकता है।

पश्चिमी मालवा पठार के अन्तर्गत कुल 09 जिलों को सम्मलित किया जाता है जो इन्दौर, देवास, धार, उज्जैन, भोपाल, रतलाम, शाजापुर, राजगढ़ एवं मन्दसौर हैं तथा पूर्वी मालवा पठार के अन्तर्गत 05 जिले है जो रायसेन, सागर, गुना, विदिशा एवं सिहोर हैं। इस प्रकार म0प्र0 के

शोधार्थी (भूगोल) समाज विज्ञान संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म0प्र0) भारत।

अन्तर्गत कुल 14 जिलों को मालवा पठार प्रदेश में सम्मिलित किया जाता है। प्रस्तुत शोध में इन्हीं जिलों का तुलनात्मक अध्ययन म0प्र0 से किया जा रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य–प्रस्तुत शोध में म0प्र0 एवं मालवा पठार प्रदेश ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या का तुलनात्मक भौगोलिक अध्ययन करने हेतु निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं एवं प्रयास रहेगा की शोध कार्य अपने उद्देश्यों की पूर्णता को प्राप्त करे।

1. ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या के आकार का तुलनात्मक अध्ययन।

2. ग्रामीण जनसंख्या एवं नगरीय जनसंख्या के गुणात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत शोध के दो उद्देश्य हैं अतः एक–एक उद्देश्य को पूरा करने के लिए समस्त शोध को दो भागों में विभाजित कर अध्ययन किया गया है।

आंकड़े एवं विधि तन्त्र– प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय आंकड़ों पर आधारित है तथा सम्बन्धित विषय पर पूर्व में किये गये शोधों के उपलब्ध साहित्य का व्यापक अवलोकन करके शोध में नवीनता लाने का प्रयास किया गया है तथा साथ ही साथ मेरी पूरी कोशिश होगी कि शोध अध्ययन एवं उससे निकला निष्कर्ष समाज के लिए उपयोगी एवं पूर्ण हितकारी हो। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है तथा आवश्यकता अनुसार सारणियों, रेखा चित्रों एवं मानचित्रों का प्रयोग करके शोध को प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है।

शोध की परिकल्पना– प्रस्तुत शोध में शोध के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है।

1. ग्रामीण की अपेक्षा नगरीय जनसंख्या का जीवन स्तर उच्च है।

2. नगरीय क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में विभेद रहा है।

प्रस्तुत शोध में निर्धारित उद्देश्य के अनुसार शोध कार्य करते हेतु शोध को मुख्यतः दो भागों में बांटकर अध्ययन किया जायेगा जिसमें शोध के उद्देश्य की प्राप्ति में सुगमता रहे।

भाग एक : ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या के आकार का अध्ययन– शोध अध्ययन में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या ऐसा सूचक है जो विकास के स्तर को स्पष्ट करके रख देता है तालिका–01 में मालवा पठार के 14 जिलों में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या का अध्ययन ग्रामीण एवं नगरीय प्रतिशत के रूप में अध्ययन किया गया है। आकड़ों को देखने से स्पष्ट हो रहा है कि 1981 में भोपाल इन्दौर दो ऐसे जिले हैं जहाँ कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है। जबकि शेष जिलों में 1981 में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत सम्पूर्ण जनसंख्या की तुलना में अधिक है।

जनसंख्या वर्ष 1991 को देखें तो स्पष्ट होता है कि लगभग सभी जिलों में 1981 की तुलना में नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत में वृद्धि की प्रवृत्ति दिख रही है। जो नगरीय क्षेत्रों में क्रमिक विकास का परिणाम है यही प्रवृत्ति जनगणना वर्ष 2001 एवं 2011 में भी देखने को मिल रही है। वहीं ग्रामीण जनसंख्या को देखें तो प्रत्येक जनगणना वर्ष में ग्रामीण जनसंख्या में निरन्तर गिरावट दिख रही है जो असन्तुलित विकास को प्रदर्शित करती है

क्योंकि नगरीय जनसंख्या में वृद्धि एवं ग्रामीण जनसंख्या में गिरावट ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की तरफ पलायन का परिणाम लग रहा है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा एवं सुख–सुविधाओं का नगरों की अपेक्षा व्यापक कमी है।

District	1981 % of urban population	1981 % of rural population	1991 % of urban population	1991 % of rural population	2001 % of urban population	2001 % of rural population	2011 % of urban population	2011 % of rural population
Bhopal	76.21	23.79	79.97	20.03	80.43	19.57	80.80	19.2
Dewas	18.71	81.29	25.89	74.11	27.39	72.61	28.9	71.1
Dhar	12.57	87.43	13.14	86.86	16.56	83.44	18.9	81.1
Guna	14.13	85.87	19.51	80.49	21.28	78.72	22.36	77.64
Indore	65.94	34.06	69.42	30.58	70.13	29.87	74.1	25.9
Mandsore	18.68	81.32	20.06	79.94	18.64	81.36	20.7	79.3
Raisen	9.95	90.05	15.73	84.27	18.38	81.62	22.8	77.2
Rajgarh	13.09	86.91	16.81	83.19	17.33	82.67	17.9	82.1
Ratlam	30.73	69.27	31.87	68.13	30.32	69.68	29.9	70.1
Sagar	27.86	72.14	29.22	70.78	29.22	70.78	29.8	70.2
Sehore	13.31	86.69	17.98	82.02	17.96	82.04	18.9	81.1
Shahjahpur	14.85	85.15	17.70	82.3	18.54	81.46	19.4	80.6
Ujjain	37.48	62.52	39.53	60.47	38.74	61.26	39.2	60.8
Vidisha	16.97	83.03	20.11	79.89	21.43	78.57	23.3	76.7

Source : DCHB 1981, 1991, 2001, 2011

जनसंख्या वर्ष 1991 को देखें तो स्पष्ट होता है कि लगभग सभी जिलों में 1981 की तुलना में नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत में वृद्धि की प्रवृत्ति दिख रही है। जो नगरीय क्षेत्रों में क्रमिक विकास का परिणाम है यही प्रवृत्ति जनगणना वर्ष 2001 एवं 2011 में भी देखने को मिल रही है। वहीं ग्रामीण जनसंख्या को देखें तो प्रत्येक जनगणना वर्ष में ग्रामीण जनसंख्या में निरन्तर गिरावट दिख रही है जो असन्तुलित विकास को प्रदर्शित करती है क्योंकि नगरीय जनसंख्या में वृद्धि एवं ग्रामीण जनसंख्या में गिरावट ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की तरफ पलायन का परिणाम लग रहा है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा एवं सुख–सुविधाओं का नगरों की अपेक्षा व्यापक कमी है।

भाग दो : ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या के गुणात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन–

ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या के गुणात्मक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए प्रस्तुत शोध में तालिका–02 में भारत एवं मध्य प्रदेश को देखें तो पता चलता है कि म0प्र0 में कृषि क्षेत्र में 1993–94 में 77.7 प्रतिशत जनसंख्या कार्यरत है वहीं इसी वर्ष में सम्पूर्ण भारत में 64.5 प्रतिशत जनसंख्या कार्यरत है जबकि 2004–05 में म0प्र0 में 69.1 तथा भारत में 57.07 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्यों में लगी है। इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि यद्यपि म0प्र0 में सम्पूर्ण भारत से कृषि कार्यों में लगी जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है पर इसमें दोनों स्तर पर गिरावट हो रही है जो शुभ संकेत है।

Table-02

Employment Shared by Sectored (In Percentage)

Sectored	1993-94		2004-05	
	M.P.	India	M.P.	India
Agriculture	77.7	64.5	69.1	57.0
Manufacturing	5.5	10.5	7.5	12.4
Services	13.4	20.7	8.2	24.1

Source : Various Report of M.P. Govt.

जबकि द्वितीय सेक्टर एवं सेवा सेक्टर में म0प्र0 का प्रतिशत सम्पूर्ण देश के प्रतिशत से कम है जो विकासशीलता की ओर संकेत करता है पर दोनों स्तर पर यह वृद्धि की ओर अग्रसर है जो विकास की ओर अग्रसर होने का संकेत है।

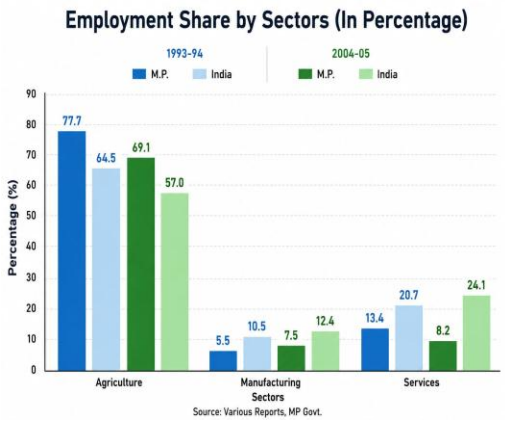

जनसंख्या के गुणात्मक विश्लेषण हेतु मालवा पठार प्रदेश के जिलों के विभिन्न आंकड़ों का अवलोकन करें तो पता चलता है कि भोपाल, इन्दौर जैसे बड़े नगरों में प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत सबसे कम है जबकि अन्य जिलों में काफी अधिक है। द्वितीय क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या भोपाल, इन्दौर एवं सागर में अन्य जिलों से अधिक है जो यहाँ औद्योगिक विकास का सूचक है जबकि अन्य जिलों में औद्योगिक विकास कम होने से नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत कम है सेवा क्षेत्र का विकास भोपाल इन्दौर, उज्जैन जैसे नगरों में ज्यादा हुआ है जबकि अन्य जिलों में ज्यादा आबादी ग्रामीण होने से इस क्षेत्र का ज्यादा विकास नहीं हुआ है।

Districts	Employment share to total working population	Employment share to total rural working population	Employment share to total urban working population
	Secondary Sector	Secondary Sector	Secondary Sector
Bhopal	24.5	5.9	30.2
Dewas	10.3	4.2	33.3
Dhar	5.9	3.8	24.1
Guna	6.8	3.3	24.0
Indore	22.8	8.0	31.8
Mandsore	6.1	3.5	20.7
Raisen	9.0	5.7	30.3
Rajgarh	6.6	4.2	22.1
Ratlam	9.1	3.4	27.8
Sagar	25.6	20.6	39.7
Sehore	5.9	3.6	20.3
Shahjahpur	5.0	3.9	17.8
Ujjain	13.6	4.2	34.5
Vidisha	6.2	3.3	20.9
M.P.	9.2	4.9	26.6

Source : Various Report of M.P. Govt. & census of India- 1991

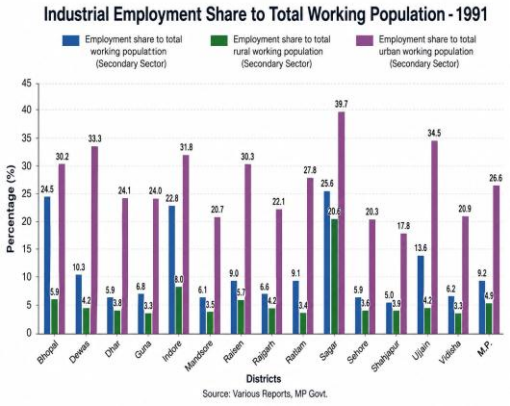

तालिका–03 में दिये जनसंख्या के कुल कार्यरत जनसंख्या के अनुपात में द्वितीय क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत एवं इसे नगरीय एवं ग्रामीण अलग–अलग प्रतिशत निकाल कर यह समझाने का प्रयास किया गया है कि द्वितीय क्षेत्र में कार्यरत ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत काफी कम है जो असन्तुलित विकास होने एवं नगरों की अपेक्षा

ग्रामीण क्षेत्रों की काफी समय से उपेक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन हेतु म0प्र0 एवं मालवा पठार प्रदेश के 14 जिलों के विभिन्न आंकड़ों का गहन विश्लेषण किया गया तथा यह पता लगाने का प्रयास किया गया कि नगरीय जनसंख्या एवं ग्रामीण जनसंख्या के जीवन स्तर एवं रोजगार शिक्षा व्यवस्था में क्या अन्तर है इस कार्य हेतु रोजगार की स्थिति को भी समझा गया तथा यह निष्कर्ष निकला की म0प्र0 के मालवा पठार प्रदेश के कुछ जिले भोपाल, इन्दौर, सागर आदि को छोड़ कर अन्य जिले विकास में काफी पीछे हैं। परन्तु विकास के उत्तरोत्तर धनात्मक रूप से आगे बढ़ने के संकेत हैं।

इस शोध से निकले निष्कर्ष के आधार पर सुझाव दिया जा सकता है कि सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में भी आधारभूत सुविधाओं का व्यापक विकास करके कृषि आधारित छोटे–छोटे कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास करने पर ध्यान देना चाहिए जिससे ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों में रोजगार, शिक्षा एवं चिकित्सा की बेहतर सुविधा का विकास होगा एवं ग्रामीण जनसंख्या का नगरों की तरफ पलायन रूकेगा तो सारी समस्यायें समाप्त हो जायेंगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. कुमार, प्रमिला (2006) ''म0प्र0 : एक भौगोलिक अध्ययन'' म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल पृ0 सं0 160–227।
2. श्रीवास्तव, प्रियंका (2011) ''मालवा प्रदेश में औद्योगिक विकास'' संविकास संदेश, गोरखपुर अंक–19 नं0 I & II पृ0सं0 75–78।
3. पाण्डेय, विनय कृष्ण (2009) जनपद बस्ती का जनसंख्या भूगोल : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम0फिल0 लघु शोध प्रबन्ध, बरकत उल्ला वि0वि0 भोपाल।
4. Verma, Sanjeev Kumar (2012) "Population Growth and Socio-Economic facilities : A case study of Ghazipur District" Indian Research Journal of Social Science Basti P.No- 168-180.
5. Sangwn, Sneh (1999) "Rural- Urban differentials in some select Aspects of Demography in India : A spatial view, " unpublished Ph.D thesis Dept. of Geography. Maharshi Dyanand Iniversity Rohtak p.p no- 110-140.